International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

अशोक बाजपेयी की कविताओं में प्रेम के विविध स्वरूप

निहारिका सिंह

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्राचीन समय से ही प्रेम और आध्यात्म जीवन के केन्द्र–बिन्दु हैं। साहित्य परम्परा में प्रारम्भ से ही इन दोनों को समस्त जातीय साहित्य में विशेष महत्व दिया गया है। भारतीय–साहित्य में वैदिक साहित्य से लेकर वर्तमान साहित्य–लेखन तक में प्रेम और अध्यात्म लेखन के प्रमुख विषय रहें हैं। संस्कृत–साहित्य में कालिदास की रचनाओं की बात करें या पाश्चात्य– साहित्य में शेक्सपीयर की, सभी साहित्यिक परम्पराओं में प्रेम कविता का मूल विषय हमेशा से रहा है, इसी प्रकार अध्यात्म के स्तर पर भारतीय साहित्य की एक समृद्ध परम्परा रही है। वेदों को भारतीय साहित्य का पहला लिखित ग्रन्थ माना जाता है, जिसका मूल विषय ही आध्यात्म है उसके पश्चात हिन्दी साहित्य में एक समूचा कालखण्ड (भक्तिकाल) ही आध्यात्मिक परम्परा का उदाहरण है। यही आध्यात्म और प्रेम की परम्परा आगे चलकर हिन्दी साहित्य के आधुनिक कवियों में भी देखने को मिलती है, इस संदर्भ में हम जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायनी' को उदाहरण के रूप में देख सकते है, यह महाकाव्य जहाँ एक तरफ प्राचीनता और नवीनता का संतुलन बताता है, अध्यात्म और दर्शन (प्रत्यभिज्ञ दर्शन) इस ग्रन्थ के केन्द्र में हैं वहीं दूसरा कामायनी में मानवीय प्रेम भी दृष्टिगत है, इस संदर्भ में अशोक वाजपेयी इसी परिपाटी के अगले चरण के कवि हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

अशोक वाजपेयी ने अपना काव्य–लेखन सन् साठ के दशक में प्रारम्भ किया। हिन्दी–साहित्य में इस समय अकवितावाद मुख्य भूमिका में था और इसी समय अशोक वाजपेयी के प्रथम काव्य–संग्रह 'शहर अब भी सम्भावना है' का प्रकाशन हुआ। अपने प्रथम काव्य–संग्रह से ही अशोक वाजपेयी को प्रसिद्धि मिलनी भी शुरू हो गई। अशोक वाजपेयी अपने काव्य–लेखन में विविधतावादी कवि रहे है, उनकी कविताएँ जहाँ विभिन्न मानवीय– संवेदनाओं पर प्रकाश डालती हैं वहीं सामाजिक समस्याओं पर भी प्रश्न उठाती हैं।

प्रेम और मानवोय संवेदनाएँ अशोक वाजपेयी की कविताओं के मूल स्वर रहे हैं और इस संदर्भ में अशोक वाजपेयी वैयक्तिक्तावादी कवि रहे है उनके अनेक काव्य–संग्रह उनके वैयक्तिक जीवन और अनुभवों में जुड़े हुए है। उन्होंने अपने पारिवारिक सदस्यों पर कविताएं लिखी हैं, कुछ कविताएं उनकी बचपन की स्मृतियों पर आधारित हैं और उनकी कविताओं में प्रेम इस प्रकार भी व्यक्त होता है। अपने पारिवारिक सदस्यों से आसक्ति भी प्रेम का ही एक रूप है। माँ के प्रति उनका प्रेम अशोक वाजपेयी की इन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है–

"दूसरों के लिए
जीवन भर मरने के बाद
अब वह जरूर स्वर्ग में होगी
अपने बेटे–बेटियों के लिए
सप्ताह में तीन चार दिन
वह करती होगी उपवास।"[1]

[1] वही, अशोक वाजपेयीः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ० 17

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

अशोक वाजपेयी की कविताओं में प्रेम के संयोग और वियोग दोनों ही रूप देखने को मिलते हैं। जहाँ एक और प्रेम का एन्द्रिक रूप देखने को मिलता है वहीं दूसरी तरफ वियोग से उत्पन्न हुए अवसाद, अकेलपान को भी इन्होंने अपनी कविताओं में स्थान दिया है और दोनों ही अर्थो में इनकी कविताएं मानवीय प्रेम को दर्शाती हैं।

हिन्दी–साहित्य में अशोक वाजपेयी की प्रेम कविताओं के दैहिक स्वरूप पर बार–बार प्रश्न भी उठते रहे हैं। अनेक कवियों ने उन्हें 'देह और गेह' का कवि कहकर खारिज करने का प्रयास किया है परन्तु यह समझना होगा कि आत्मसम्मुख कवि हमेशा समाज विमुख हो ऐसा आवश्यक नहीं है उन्होंने प्रेम, पड़ोस, परिवार, जीवन, मृत्यु सभी पर कविताएं लिखी हैं और यह सब भी जीवन और समाज का ही एक अंग हैं। युवा कवि–आलोचक प्रकाश के शब्दों में कहें तो, "अशोक वाजपेयी ने अपने कवि को मिले हुए समाज से कुछ निर्मितियों का चयन कर उनकी अन्तरंग पुनर्रचना की और यही उनकी कविता का समाज है, उनका समाज–बोध। प्रेम और मृत्युबोध को समाज से बाहर का तत्व कौन कह सकेगा?"[2]

अशोक वाजपेयी आत्मीय–अनुभव के कवि हैं उन्होंने कविता में वही लिखा है जो उन्होंने जीवन में अनुभव किया है। आत्मबोध और मानवीय–संवेदना रहित कविता साहित्य के लिए घातक है, इस संदर्भ में अशोक वाजपेयी कहते है, "मैं सचमुच समाज को जानने का कोई दावा नहीं करता।.....मैं तो बचपन से अपने पड़ोस को जानता आया हूँ और समाज के बजाय पड़ोस का कवि हूँ। एक ऐसे समय में जब सभी लोग समाज और समय पर सामाजिक संघर्ष और सम्बन्धों पर कविता लिखते हों .....यह

[2] कविता का अशोक पर्वः प्रकाश, वाणी प्रकाशान, नई दिल्ली, पृ० 22

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

एक तरह का अघोषित प्रतिपक्ष बन जाता है।''[3]

अन्त में यह कह सकते हैं कि अशोक वाजपेयी अपने समय में अकेले ऐसे कवि रहे हैं जिन्होंने विविधतावादी काव्य–प्रवृत्ति को कविता में स्थान दिया है और इस सन्दर्भ में हम उन्हें प्रसाद, निराला, अज्ञेय के अगले चरण के कवि के रूप में भी देख सकते हैं। उनकी कविताओं में जीवनासक्ति भी है, दहिक और अध्यात्मिक प्रेम का संयोग है अवसाद और अकेलेपन का वियोग भी है। उनकी कविताएं में पड़ोस भी है और समाज भी है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अशोक वाजपेयी मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं।

[3] पाव भर धीरे में भोज; अशोक वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ० 80